

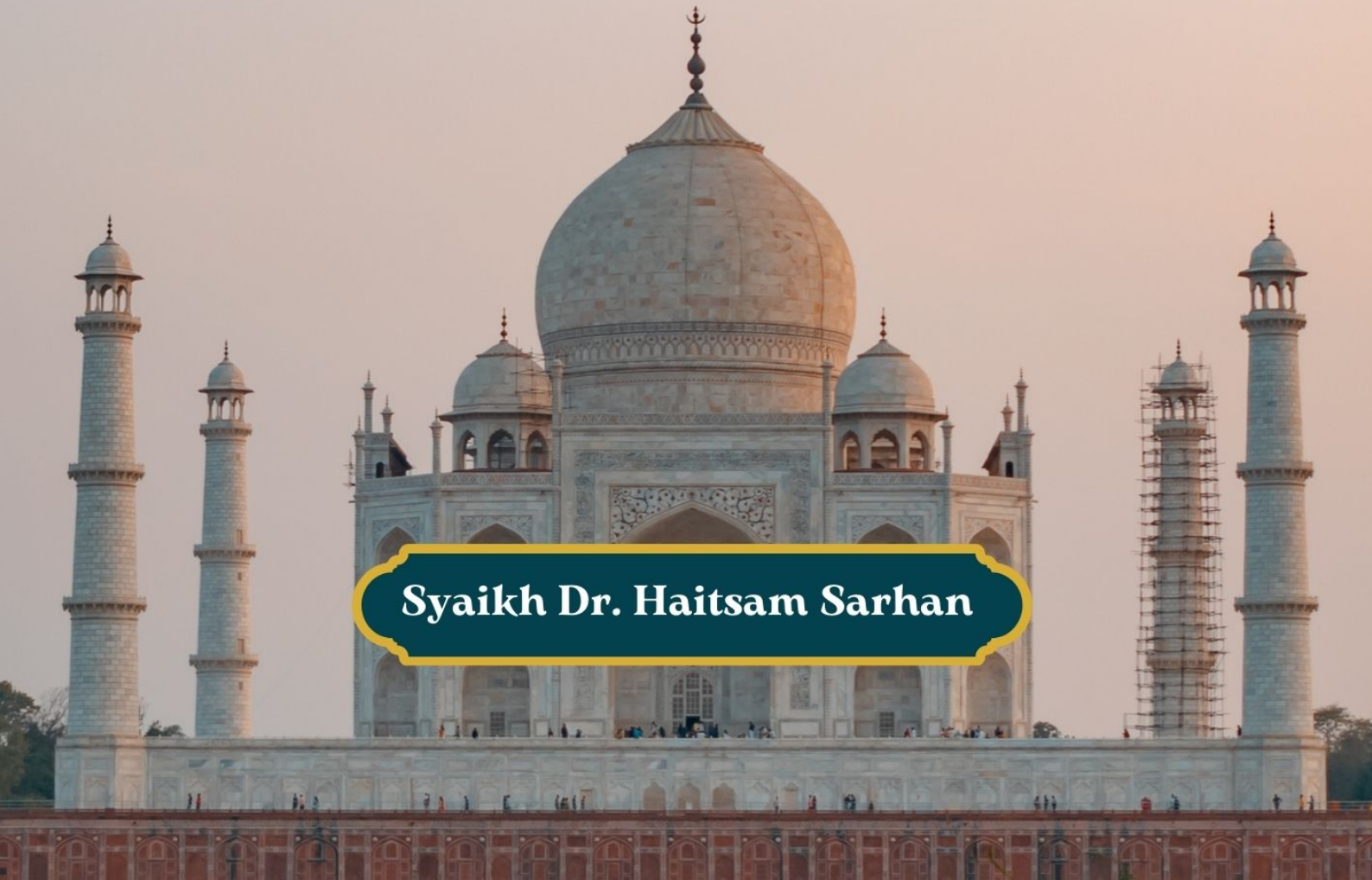
اللغة الهندية

हिंदी भाषा

دليل المسلم الجديد، ما هو الإسلام؟
للشيخ د. هيثم سرحان

नवीन मुस्लिम मार्गदर्शक इस्लाम क्या है?

Syaikh Dr. Haitsam Sarhan



رِسَالَةٌ مُخْتَصَرَةٌ بِعُنْوَانٍ:
«كَيْفَ أَذْخُلُ فِي الْإِسْلَامِ؟»
مُتَرْجَمَةٌ إِلَى اللُّغَةِ: الهِنْدِيَّةِ

«मैं इस्लाम कैसे अपनाऊँ»

أَنُؤَاد: سَابِرِ هُسَيْنِ بَنِ مُحَمَّدٍ مُجِيبُ الرَّهْمَانِ

إِعْدَادُ الْفَقِيرِ إِلَى عَفْوَرِيَّةِ:

هَيْثَمُ بْنُ مُحَمَّدٍ سَرْحَانِ

الْمُدْرِسُ بِمَعْهَدِ الْحَرَمِ بِالْمَسْجِدِ النَّبَوِيِّ - سَابِقًا - وَالْمُشْرِفُ عَلَى مَعْهَدِ السُّنَّةِ

<https://mahadsunnah.com/>

غُفِرَ لِلَّهِ وَلِوَالِدَيْهِ وَلِنَ أَعَانَهُ عَلَى إِخْرَاجِ هَذَا الْكِتَابِ

قَامَ بِتَرْجَمَتِهَا: صَابِرُ حُسَيْنِ بَنِ مُحَمَّدٍ مُجِيبُ الرَّحْمَنِ - وَفَّقَهُ اللَّهُ وَسَدَّدَهُ -

الطَّبْعَةُ الْأُولَى

[حَقُوقُ الطَّبْعِ مُتَّاحَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ بِدُونِ أَيِّ تَغْيِيرٍ فِي الْمَحْتَوَى]



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

प्रश्न:	उत्तर:
क्या इस्लाम धर्म स्वीकार करना आसान है?	हाँ, इसके लिए किसी मध्यस्थ या अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है।
क्या मुझे इस्लाम स्वीकार करने में जल्दबाजी करनी चाहिए, या मुझे उचित समय का इंतजार करना चाहिए, अथवा समस्याओं के समाप्त होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए?	जल्दबाजी करना जरूरी है, क्योंकि इस्लाम स्वीकार करने में देरी करने से बुराइयाँ पैदा हो सकती हैं। आप किसी भी समय मर सकते हैं, और चूँकि इस्लाम में प्रवेश करना एक लाभदायक व्यवसाय है, और व्यापार आरंभ करने में आप जितना अधिक जल्दी करेंगे वह आपके लिए उतना अधिक लाभदायक होगा।
जो व्यक्ति इस्लाम अपनाना चाहता है उसे क्या करना चाहिए?	उसे केवल दो शहादत (गवाही) अर्थात: (अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु) का उच्चारण करना है:
किस भाषा में इसका वचन लिया जायेगा?	जो भाषा वह अच्छे से जानता है उसी भाषा में इसका वचन ले सकता है, इसे अरबी भाषा में ही कहना शर्त नहीं है।



प्रश्न:	उत्तर:
वया वह इसका अर्थ समझे बिना इसका वचन ले सकता है?	नहीं, बल्कि उसे इसका अर्थ समझना चाहिए, इसमें जो कुछ है उस पर विश्वास करना चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए।
“अश्हदु” का वया अर्थ है?	इसका अर्थ है: मैं अपने हृदय से स्वीकार करता हूँ, अपनी जुबान से बोलता हूँ तथा अंगों के द्वारा इसके अनुसार कार्य करता हूँ।
“ला इलाहा इल्लल्लाह” का वया अर्थ है?	इसका अर्थ है: अल्लाह के अलावा वास्तव में पूजा करने योग्य कोई नहीं है।
“अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु” का वया अर्थ है?	इसका अर्थ है कि: वह अल्लाह के दास हैं जिनकी पूजा नहीं की जा सकती, तथा उसके रसूल (दूत) हैं जिनको झुठलाया नहीं जा सकता। इस गवाही से यह अनिवार्य हो जाता है कि: आप जो सूचना दें उसमें आपकी पुष्टि की जाए, आप जो आदेश दें उसका पालन किया जाए तथा जिससे आपने गेका और मना किया है उससे रुक जाए, एवं आपकी सुन्नत का अनुसरण करे और आपकी पैरवी करे।
मैं अच्छी तरह समझ गया, अब मुझे क्या करना चाहिए?	मेरे साथ-साथ दोहराएं: “अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु (अर्थात: मैं इस बात की गवाही देता हूँ



प्रश्न:	उत्तर:
वया अब मैं मुसलमान हूँ?	कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं और इस बात की गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदे और रसूल हैं।
अब एक मुसलमान के रूप में आप मुझे क्या करने की सलाह देते हैं?	हाँ, अल्लाह का शुक्र है, यह आप पर अल्लाह की कृपा है। मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप अल्लाह से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने धर्म में दृढ़ बनाए रखे, अच्छे साथी चुनें जो इसमें आपकी मदद करें, इस्लाम सीखें और अपने इस्लाम को तब तक छिपाएं जब तक वह अल्लाह की इच्छा से मजबूत न हो जाए।
सर्वोत्तम दुआ (प्रार्थना) क्या है?	﴿أَهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ﴾ (इहिदनस्सिरातल मुस्तक्रीम) अर्थात: हे अल्लाह! मुझे सीधा मार्ग दिखा।
सबसे आसान ज़िक्र (जाप) क्या है?	सबसे आसान ज़िक्र “बिस्मिल्लाह” कहना है, यह कहा जायेगा: मस्जिद एवं घर में प्रवेश करते समय एवं निकलते समय, कुरआन पढ़ते समय, शौचालय में प्रवेश करने के पूर्व, वस्त्र उतारने के



प्रश्न:	उत्तर:
इस्लाम में प्रवेश करने से पहले मैंने जो पाप किये थे उनका क्या हुक्म है?	पूर्व, वुजू के पहले तथा खाने-पीने के पहले इत्यादि स्थानों पर। इस्लाम अपने पहले के पापों को नष्ट कर देता है, सिवाय उन लोगों के अधिकारों के जिन्हें अदा किया जाना अनिवार्य है, अतः इसे उन लोगों को अदा किया जाना चाहिए जो इनके हकदार हैं।
शहादत (गवाही) के बाद अब मेरे ऊपर क्या अनिवार्य है?	आपके ऊपर स्नान करना अनिवार्य है।
मैं स्नान क्यों करूँ?	<u>प्रथम</u> : मुसलमान यह नहीं कहता है कि “क्यों” अपितु वह कहता है: ﴿سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ (हमने सुना और अनुसरण किया)। <u>द्वितीय</u> : आप स्नान इसलिए करें ताकि अपने शरीर के बाहरी भाग को भी उसी प्रकार से शुद्ध कर लें जिस प्रकार से आपने शरीर के आंतरिक भाग को शुद्ध किया है।
अच्छा, ठीक है, मैं स्नान कैसे करूँ?	अपने दिल में स्नान करने का इरादा करके “बिस्मिल्लाह” कहते हुए समस्त शरीर पर पानी बहा लें।



प्रश्न:	उत्तर:
स्नान के बाद क्या करना है?	जब नमाज़ का समय होगा तो आप अल्लाह की अनुमति से नमाज़ अदा करेंगे।
मेरे लिये नमाज़ पढ़ना कठिन है, क्योंकि इसमें ऐसे कथन एवं कार्य हैं जिनको मैं अच्छे ढंग से अदा नहीं कर सकता?	इस्लाम आसानी का धर्म है, कठिनाई का धर्म नहीं, अतः प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए ही है।
मैं नमाज़ कैसे पढ़ूँ?	आप मुझे देख-देख कर नमाज़ पढ़ें, या नमाज़ सिखाने वाली वीडियो विलप देखें तथा इस पुस्तिका के अंत में सूचीबद्ध लिंक के अनुसार आपको मअहद अल-सुन्नत संस्थान के चैनलों पर कई भाषाओं में वीडियो विलप भी मिल जायेंगी।
नमाज़ के बाद अब क्या करूँ?	आपको इस्लाम के उन पाँच अरकान (स्तंभों) को जानना चाहिए जिनके ऊपर इस्लाम का आधार है, फिर ईमान के अरकान, और इसी तरह... यहाँ तक कि आप उन चीज़ों को पूर्ण कर लें जिनके द्वारा आपका इस्लाम और ईमान सही हो।



प्रश्न:	उत्तर:
इस्लाम सीखने के लिए आप मुझे किन वेबसाइटों पर जाने की सलाह देते हैं?	मैं आपको सऊदी अरब के प्रमुख विद्वानों और सामुदायिक दावा सेंटर की वेबसाइटों का भ्रमण करने की सलाह देता हूँ।
मैं अपने गैर-मुस्लिम रिश्तेदारों के साथ कैसा व्यवहार करूँ?	आप उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा व्यवहार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गैर-मुस्लिमों के साथ किया करते थे, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी जुबान, अपनी नैतिकता एवं अपने व्यवहार से इस्लाम की दावत देने वाले थे।
बोई है जो इस्लाम अपनाना चाहता है, परंतु अपने परिवार को अपने इस्लाम अपनाने के बारे में नहीं बताना चाहता, तो उसका क्या हुकम है?	कदापि आवश्यक नहीं है कि वह अपने इस्लाम के बारे में किसी को बताए, क्योंकि उसका इस्लाम उसके एवं उसके अल्लाह के बीच का मामला है।
इस्लाम में सबसे अच्छी किताब कौन सी है?	सबसे अच्छी किताब पवित्र कुरआन है, क्योंकि यह सर्वशक्तिमान अल्लाह का कलाम (वाणी) है।



प्रश्न:	उत्तर:
पवित्र कुरआन में सबसे महत्वपूर्ण सूरह कौन सी है?	सबसे महत्वपूर्ण सूरह अल-फ़ातिहा है, यही कारण है कि हम इसे नमाज़ की हर रकअत में पढ़ते हैं।
पवित्र कुरआन में सबसे महान आयत कौन सी है?	पवित्र कुरआन में सबसे महान आयत आयतुल कुर्सी है।
मैं कुरआन कैसे पढ़ सकता हूँ?	कुरआन सीखने और तिलावत सुनने के द्वारा, जैसे शेख हुजैफ़ी एवं शैख हुसरी आदि की तिलावत को सुनना।
मैं कुरआन को कैसे समझूँ?	आप इसे उम्मत के प्रशंसित विद्वानों द्वारा लिखित तफ़सीर (व्याख्या) की पुस्तकों को पढ़कर समझ सकते हैं।
मुझे कुरआन की तफ़सीर कहाँ मिल सकती है?	मैं आपको पैग़म्बर के शहर मदीना में स्थित कुरआन प्रिंटिंग कॉम्प्लेक्स का दौरा करने की सलाह देता हूँ।
कुरआन के बाद आप मुझे क्या पढ़ने की सलाह देते हैं?	मैं आपको नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रामाणिक हदीसों को पढ़ने की सलाह देता हूँ।
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों की	हदीस की सर्वोत्तम और सबसे सही किताब “सहीह अल-बुख़ारी” नामक किताब है। उम्मत इस के सर्वोत्तम होने पर एकमत है। मैं आपको



प्रश्न:	उत्तर:
सबसे अच्छी किताब कौन सी है?	इस पुस्तिका के अंत में पुस्तक डाउनलोड लिंक का उपयोग करने की सलाह देता हूँ।
पैगंबर की सुन्नत में सबसे महत्वपूर्ण हदीस कौन सी है?	इनमें से सबसे महत्वपूर्ण हदीस, हदीस -ए-जिब्रील है, जो धर्म के तीन स्तंभों की व्याख्या करती है: इस्लाम, ईमान एवं एहसान।
मुझे डर है कि मैं इस्लाम नहीं सीख पाऊंगा?	डरें नहीं, बल्कि अल्लाह पर भरोसा रखें, सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह आपके प्रयास में आपकी सहायता करेंगे, धर्म आसान है, अल्लाह आपको उस चीज का अनुग्रह प्रदान करे जिसे वह पसंद करता है और उससे प्रसन्न होता है। आप पुस्तिका के अंत में दिए गए लिंक से हमारे संस्थान “मअहद अल- सुन्नत” पर जा कर, घर बैठे ही निःशुल्क अध्ययन कर सकते हैं। अंत में, मैं आपको नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कथन के द्वारा वसीयत करता हूँ: “जो वस्तु आपके लिए लाभदायक हो उसके लिए प्रयास करें, अल्लाह से सहायता मांगें और असमर्थता का प्रदर्शन न करें”।



मअहद अल-सुन्नत चैनलों के लिंक

टेलीग्राम का लिंक



फेसबुक का लिंक



मअहद अल-सुन्नह वेबसाइट



वाट्सअप का लिंक



हैसम सरहान वेबसाइट



किताबें डाउनलोड करने का
लिंक



यूट्यूब चैनल 1



यूट्यूब चैनल 2



यूट्यूब चैनल 3



3 तौहीद के प्रकार

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को उसकी समस्त विशेषताओं: उपास्य होने, सृजनकर्ता होने तथा उसके नाम एवं गुण में, उसको अकेला मानना।
तथा इसके तीन प्रकार हैं

तौहीद अल-असमा व अल-सिफात

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने कुरआन में या अपने रसूल के द्वारा अपना जो नाम या विशेषता बताई है, उन सब में अल्लाह को अकेला मानना, और वह इस प्रकार कि उसने अपने लिए जो साबित किया है उसको साबित करना और जिसका अपनी ओर से इंकार किया है उसका इंकार करना। बिना किसी हेर-फेर, निरस्तिकरण, कैफियत एवं समानता बयान किये हुये के।

तौहीद -ए- उलूहियत

उपासना एवं आराधना योग्य होने में सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को अकेला मानना या बंदों के कर्मों में अकेला मानना।

तौहीद -ए- रुबूबियत

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को उसके समस्त क्रियाकलाप में अकेला मानना अथवा अल्लाह तआला को सृष्टि कर्ता होने, बादशाहत तथा तदबीर करने में, अकेला मानना।

दीन की तीन श्रेणियां हैं

एहसान

आप सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह की इबादत इस प्रकार से करें कि मानो आप अल्लाह को देख रहे हैं और यदि आप उसे नहीं देख रहे हैं तो वह आपको तो अवश्य देख रहा है।

(एहसान का) एक ही रुकन है, तथा इसके अंतर्गत दो दर्जे हैं:

- 1- मुशाहदा (दर्शन) वाली इबादत: आप अल्लाह की इबादत व उपासना ऐसे करें मानो उसे देख रहे हों।
- 2- निगरानी वाली इबादत: यदि आप उसे नहीं देख रहे हैं तो वह आपको अवश्य देख रहा है।

ईमान

जुबान से इकरार करना, दिल से विश्वास रखना, शरीर के अंगों से कर्म करना, ईमान (सुकर्म से) बढ़ता है और (कुकर्म से) घटता है।

ईमान के अरकान (स्तंभ): 6

- 1- अल्लाह पर ईमान (विश्वास) रखना।
- 2- उसके फ़रिश्तों पर ईमान रखना।
- 3- उसकी किताबों पर ईमान रखना।
- 4- उसके रसूलों पर ईमान रखना।
- 5- आखिरत के दिन पर ईमान रखना।
- 6- तथा अच्छे व बुरे भाग्य पर ईमान रखना।

इस्लाम

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को अकेला मानते हुए उसके आगे नतमस्तक हो जाना, उसकी आज्ञाकारी करते हुए आत्मसमर्पण कर देना तथा शिर्क एवं मुश्रिकीन से संबंध विच्छेद कर लेना।

इस्लाम के अरकान (स्तंभ): 5

- 1- अल्लाह एवं उसके रसूल की गवाही देना।
- 2- नमाज़ स्थापित करना।
- 3- ज़कात (दान) देना।
- 4- रमज़ान का रोज़ा रखना।
- 5- जो क्षमतावान हो उसका ख़ाना -ए- काबा का हज़्ज करना।

4 मुहर्रमात (वर्जनाओं) के प्रकार:

सगीरा गुनाह

(यह कबीरा से छोटा है) इस्तिग़फ़ार एवं क्षमा याचना करने से कबीरा गुनाह माफ़ हो जाता है तथा बार-बार करने से सगीरा गुनाह कबीरा गुनाह में परिवर्तित हो जाता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: (तुम गुनाहों को तूच्छ समझने से बचो क्योंकि यह किसी व्यक्ति के ऊपर एकत्रित हो जाती है तथा उसका नाश कर देती है)

कबीरा गुनाह

(प्रत्येक वह पाप जिसके करने पर निश्चित दण्ड निर्धारित है) जैसे जादू, मातृ-पिता की अवज्ञा करना, ब्याज खाना, व्यभिचार करना, समलैंगिक होना, झूठ बोलना, शराब पीना, चोरी करना, ग़ीबत करना, बिना किसी कारण के मासूम जान को मारना, अनाथ का माल खाना।

शिर्क -ए- असगर

(यह इस्लाम धर्म से निष्कासित नहीं करता है, यह कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा कबीरा गुनाह है) जैसे कोई कहे: जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, गैरुल्लाह की क़सम खाना, थोड़ी सी रियाकारी (पाखण्ड), शिर्क आधारित जंतर लटकाना, अपशकुन लेना, हाथ की रेखाओं को पढ़ना एवं सीप लटकाना इत्यादि यह समझते हुये कि यह सुरक्षा करेगा अथवा बुरी नज़र लगने से बचाएगा।

शिर्क -ए- अकबर

(यह इस्लाम धर्म से निष्कासित करने वाला है, तथा यदि इसी स्थिति में मृत्यु हो गई तो कभी माफ़ नहीं किया जायेगा) ऐसा करने वाला व्यक्ति दूसरों को अल्लाह के समान बना लेता है तथा अल्लाह से प्रार्थना करने के समान उससे प्रार्थना करता है, या उससे भयभीत होता है, या उससे आशा रखता है अथवा उससे अल्लाह स प्रेम करने के समान प्रेम करता है, या पूजा के किसी प्रकार को उसके लिये अंजाम देता है।

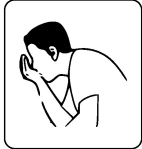
वुजू का तरीका।

दिल से वुजू की नीयत करे, जुबान से नीयत के शब्द न बोले, फिर बिस्मिल्लाह" कहे, इसके पश्चात अपनी हथेलियों को धोए।



1

फिर अपनी दाहिनी हथेली में पानी ले और उससे कुल्ली करे "पानी को अपने मुँह में डाले तथा इसे मुँह में घुमाए" इस के बाद इसे अपने मुँह से बाहर फेंके, फिर अपने नथनों में पानी से इस्तिंशाक करे "अर्थात: पानी को नाक से ऊपर खींचे" फिर इस्तिंसार करे "अर्थात: पानी को अपनी नाक से बाहर फेंके एवं बाएं हाथ की अपनी शहादत की ऊँगली (तर्जनी) एवं अंगूठे को अपनी नाक पर रखे"।



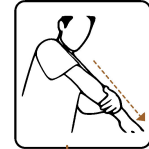
2

फिर अपने मुख को धोए "लंबाई में सिर की सामान्य बालों की रेखा से दाढ़ी और ठोड़ी के अंत तक एवं चौड़ाई में दोनों कानों के बीच तक"।



3

फिर अपने हाथों को उँगलियों की नोक से लेकर कोहनियों तक धोए, आरंभ दाहिने हाथ से करे तत्पश्चात बाएं हाथ को धोए।



4

फिर अपने सिर का मसह करे, सिर के आरंभिक भाग से शुरू करते हुए अपने हाथों को पीछे गुद्दी तक ले जाए फिर उन्हीं वापस अपने सिर के आरंभिक भाग तक लाए।



5

फिर वह अपनी तर्जनी (शहादत की ऊँगली) को अपने कानों के छेद में डाले एवं अपने अंगूठे के माध्यम से कान के ऊपरी भाग का मसह करे अर्थात पोछे।



6

फिर वह अपने पैरों को टखनों समेत धोए।



7

- मशरूअ एवं निश्चित मात्रा से अधिक करने का हुक्म ?

वुजू में निर्धारित मात्रा से अधिक करना जायज़ (उचित) नहीं है, जैसे तीन से अधिक बार धोना, या कोहनी के ऊपरी भाग अर्थात बाजू को धोना, या पैर की एड़ी के ऊपरी भाग को धोना, या गर्दन को पोछना।



8

- वुजू से फ़ारिग होने के बाद यह दुआ पढ़े:

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु, व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, अल्लाहुम्मजअल्ली मिनतत्वाबीन वजअल्ली मिनल मुततहहिरीन।

9

- वुजू को तोड़ने वाली चीज़ें :

- 1- अगवाड़े एवं पिछवाड़े से निकलने वाली चीज़, जैसे पेशाब, मल या पाद।
- 2- सो जाने के कारण या बेहोशी की वजह से सोचने-समझने की शक्ति का समाप्त हो जाना।
- 3- ऊंट का मांस खाना।

10

तयम्मूम का तरीका

तयम्मूम : पानी के द्वारा प्राप्त होने वाली पाकी एवं शुद्धि के विकल्प को कहते हैं, जब पानी अनुपलब्ध हो अथवा पानी प्रयोग करने पर हानि होने का भय हो तो इस स्थिति में शारीरिक अंगों को पाक एवं शुद्ध करने के लिए मिट्टी पानी का स्थान ले लेता है।

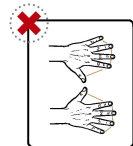
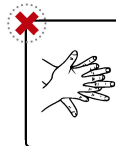
1

मन में तयम्मूम करने की नीयत करे, फिर बिस्मिल्लाह कहे, इस के बाद ज़मीन पर एक बार मारे, और अपनी हथेलियों से अर्थात हाथ के भीतरी भाग से अपने चेहरे एवं हथेली के ऊपरी भाग का मसह करे।



2

मिट्टी पर मारते समय उँगलियों को खोल कर रखना, एवं हथेलियों का मसह करते «पोछते» समय इन का खिलाल करना, दोनों ही मशरूअ (विधान) नहीं हैं।



3

वाजिब गुस्ल (अनिवार्य स्नान) का ढंग व तरीका

मन में गुस्ल करने की नीयत करे, फिर चुपके से बिस्मिल्लाह कहे, तत्पश्चात कुल्ली एवं नाक में पानी डालने सहित समस्त शरीर पर एवं हल्के एवं घने बालों के नीचे पानी पहुँचाए।

1

- गुस्ल को वाजिब (स्नान को अनिवार्य) करने वाली चीज़ें :

- 1- जनाबत: जो कि संभोग इत्यादि के द्वारा वीर्य स्खलन से होता है, अथवा दो जननांगों (शिश्न एवं योनि) का मिलन मात्र हो तब भी स्नान अनिवार्य हो जाता है यद्यपि वीर्य स्खलन न हो।
- 2- मासिक धर्म रक्तसाव और प्रसवोत्तर रक्तसाव।
- 3- शहीद होने की स्थिति में न मरना।
- 4- काफिरों का इस्लाम लाना।

2

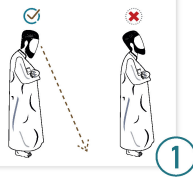


संकलन : डॉ. हैसम सरहान, शिक्षक मस्जिद -ए- नबवी एवं "मअहद अल-सुन्नह सुन्नत संस्थान : mahadsunnah.com" के पर्यवेक्षक।

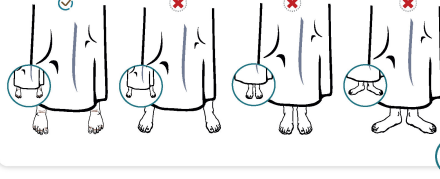
कॉपीराइट और वितरण अधिकार उपलब्ध हैं। - ब्रोशर के अनुवाद के लिए : sarhaan.com पर जाएं अथवा बारकोड को स्कैन करें।

इमाम और अकेले नमाज़ पढ़ने वालों का अपने सामने सुन्नह रखना सुन्नत है, और इमाम का सुन्नह ही उन के पीछे नमाज़ पढ़ने वालों का सुन्नह है।

अपनी दृष्टि उस स्थान पर रखें जहाँ सज्दा करता (श्रीश नवाला) है, और इधर-उधर न देखें।



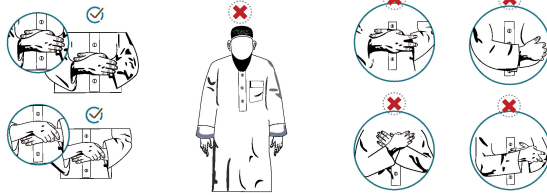
दोनों कंधों के मध्य जितनी दूरी है उतनी ही दूरी दोनों पैरों के बीच रखनी चाहिए, न बढ़ाए और न घटाए, और दोनों के बाहरी भाग को बिल्कुल सीधा रखें।



नमाज़ की शर्तों को पूर्ण करने के पश्चात, हाथों की उँगलियों को एक दूसरे से मिलाए हुए हाथों को कानों अथवा कंधों के बराबर उठाते हुए ("अल्लाहु अकबर") कहे, तथा हथेलियों के भीतरी भाग को क़िबला की दिशा में रखें।



फिर अपनी दाहिनी हथेली के अंदरूनी हिस्से को अपनी बाईं हथेली के बाहरी भाग, अथवा कलाई अथवा बाजू पर रखें और हाथों को "छाती पर रखें" या इसे पकड़ें रहें।



- फिर मुस्तहब है कि केवल पहली रकअत में दुआ -ए- इस्तिफ़ताह पढ़ें, तथा उत्तम यह है कि इस्तिफ़ताह के विषय में वर्णित दुआओं के मध्य विविधता अपनाए, तथा कहे:

"सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारका इस्सुका व तआला जदका व ला इलाहा रैरुका"

- तत्पश्चात वर्णित इस्तिआज़ा के वाक्यों द्वारा अल्लाह की शरण चाहे, उदाहरणतः यों कहे: "अऊजु बिल्लाहि मिनशैतानिरजीम"।

- इसके पश्चात "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" कहे, और सूरह फ़ातिहा का पाठ करे, इस के छंदों, शब्दों, अक्षरों एवं स्वरों को उसी क्रमवार ढंग से कहे जिस प्रकार वो वर्णित हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। (1) अल्लहुमुदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (2) अर्रहमानिर्रहीम (3) मालिकि यौमिद्दीन (4) इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन (5) इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम (6) सिरातल लज़ीना अन अमता अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ालीन (7)]]।

- फिर मुस्तहब तौर पर बिना इस्तिआज़ा के कुरआन से जो कुछ पढ़ना सरल हो उसे पढ़ें, तथा बिस्मिल्लाह केवल सूरह के आरंभ में ही पढ़ें।

फिर जिस प्रकार से तकबीर -ए- तहरीमा में "अल्लाहु अकबर" कहा था उसी प्रकार से "अल्लाहु अकबर" कहते हुए अपने दोनों हाथों को उठाए तथा रूकू अकरे, तत्पश्चात अपने घुटनों को पकड़ें एवं कोहनियों को मोड़ें नहीं, और पीठ को अपने सिर के बराबर में सीधा रखें, तथा एक बार वाजिबी तौर पर (अनिवार्य रूप से) "सुब्हान रब्बिल अज़ीम" कहे, एवं एक बार से अधिक कहना तथा इस विषय में जो अन्य दुआएं (जाप) वर्णित हैं उन्हें पढ़ना मुस्तहब है।

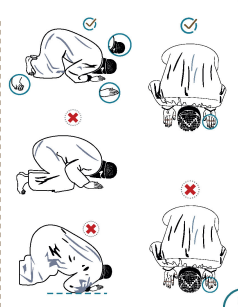


फिर, उठने के साथ और सीधा होने से पहले, कहे: "समिअल्लाहु लिमन हमिदहु" अपने दोनों हाथों को कानों के बराबर अथवा कंधों के बराबर उठाते हुए।

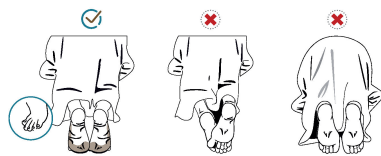
और जब सीधा हो जाए, तो कहे: "रब्बना व लकल हमद", तथा इस के सिवा और भी जो दुआएं (जाप) वर्णित हैं उन्हें पढ़ना मुस्तहब (वांछनीय) है।

इस के पश्चात बिना हाथ उठाये तकबीर कहे और सात अंगों: पेशानी (ललाट) एवं नाक, दोनों हथेलियों के भीतरी भाग, दोनों घुटने तथा दोनों पंजों के तलवों पर सज्दा करे।

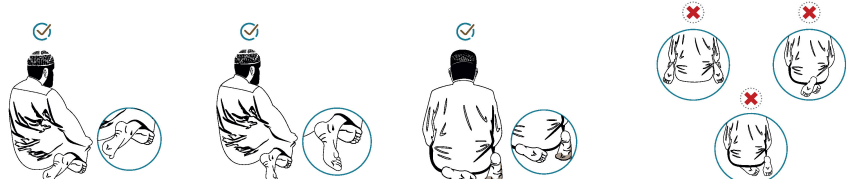
तथा बगलों के बीच, पेट और जाँघ के बीच, और जाँघ और पिंडली के बीच दूरी रखें, और अपनी भुजाओं को भूमि से ऊपर उठा कर रखें।



तथा एक बार वाजिबी तौर पर (अनिवार्य रूप से) "सुब्हान रब्बिल आला" कहे, एवं एक बार से अधिक कहना तथा इस विषय में जो अन्य दुआएं (जाप) वर्णित हैं उन्हें पढ़ना मुस्तहब है।



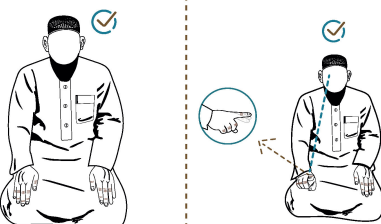
फिर तकबीर कहे और अपने बाएं पाँव को बिछा कर बैठें, और दाहिने पाँव को खड़ा रखें, तथा दाहिने पाँव की उँगलियों के तलवों को ज़मीन पर तथा उँगलियों को क़िबला की ओर रखें, और हथेलियों के भीतरी भाग को जाँघों के अंतिम सिरा पर रखें, तथा यह दुआ पढ़ें: "रब्बिग़फ़िर ली", बैठने का यह ढंग नमाज़ की सभी जलसों बैठने की भंगिमाओं में होगा, परंतु तीन रकअत अथवा चार रकअत वाली नमाज़ों के अंतिम तशहहुद में तबर्क करेगा, अर्थात: अपने बाएं पाँव को दाहिनी पिंडली के नीचे रखेंगा।



फिर तकबीर बोले और पहले सज्दे की तरह सज्दा करें, फिर तकबीर कहे और दूसरी रकअत के लिए उठें, और जैसा उसने पहली रकअत में किया था वैसा ही करे, सिवाय इस के कि दूसरी रकअत में तकबीर -ए- तहरीमा एवं दुआ -ए- इस्तिफ़ताह नहीं है।

जब दूसरा सज्दा पूरा कर ले तो तशहहुद के लिए बैठें।

अपनी शहादत की ऊँगली तर्जनी से इशारा करे तथा मध्यमा और अंगुठे से गुलाकार बनाए, एवं अपनी ऊँगली से दुआ करते हुए इसे हिलाए।

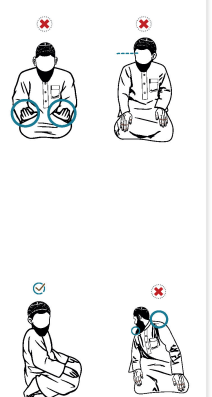


इस के पश्चात तशहहुद पढ़ें, फिर दरूद -ए- इब्राहीमी पढ़ें: अतहियातु लिल्लाहि वसलवातु वतैयिबातु, अस्सलामु अलैका अय्यूहन नबियु व रहमतुल्लाही व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अल्ला मुहम्मदनु अब्दुहु व रसूलुहु।

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद, व अला आले मुहम्मद, कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीम, इन्नका हमीदुन मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद, व अला आले मुहम्मद, कमा बारक्ता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीम, इन्नका हमीदुन मजीद।

फिर चार चीजों से अल्लाह की पनाह माँगे: अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजुबिका मिन अज़ाबि जहन्नम, व अऊजुबिका मिन अज़ाबिल कब्र, व अऊजुबिका मिन फ़ितनतिदुज्जाल, व अऊजुबिका मिन फ़ितनतिल मह्या वलममात। तथा उसे जो प्रिय हो वह दुआ करे, एवं उत्तम यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित दुआएं पढ़ें एवं उनके साथ इस दुआ को मिलाए: अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुसि इबादतिका।

फिर अपनी दायीं ओर और बाईं ओर दो सलाम फेरे, और इस प्रकार से कहे: अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह, एवं अपने सिर को केवल कंधे के बराबर तक घुमाए, और अपने सिर को ऊपर नीचे न घुमाए, तथा न ही अपने हाथों से इशारा करे।



**जकात अल-फ़ित्र का हुक्म:**

मुस्तहब है:	वाजिब है:	
गर्भाशय में पल रहे शिशु की ओर से।	प्रत्येक उस मुसलमान पर जिस पर रमज़ान मास के अंतिम दिन का सूर्य अस्त हुआ हो, यद्यपि: वह बड़ा हो, छोटा हो, पुरुष हो, महिला हो, स्वतंत्र हो अथवा दास हो।	तथा उस के पास, ईद के दिन एवं उस की रात्रि तक के लिए, उस के एवं उस के परिवार वालों के भोजन एवं मूल आवश्यकताओं से एक साअ अधिक हो।

जकात अल-फ़ित्र को मशरूअ (विधान) करार देने की हिकमत (तत्वज्ञान):

यह रोज़ेदार को बेहूदगी एवं अश्लीलता से پاک एवं पवित्र करने के लिये है।	यह भिक्षुकों तथा निर्धनों को ईद के दिन माँगने से बेपरवाह एवं चिंतारहित करने के लिये है।
--	---

जकात अल-फ़ित्र निकालने का समय:

जायज़ समय:	मुस्तहब (वांछनीय) समय:	हराम समय:
ईद से एक दिन अथवा दो दिन पूर्व।	ईद की नमाज़ के पूर्व फ़ज्र की नमाज़ के बाद।	ईद की नमाज़ के पश्चात।

जकात अल-फ़ित्र में क्या निकालना पर्याप्त व काफी होगा:

जिन खाद्य पदार्थों को मानव सामान्यतः खाता है उन में से "एक साअ" निकालना, एवं "एक साअ" उन्नत गेहूँ का वज़न लगभग दो किलो चालीस ग्राम होता है, तथा प्रत्येक अनाज का भार उसके आधार पर कम या अधिक होता है।	नक़दी निकालना पर्याप्त नहीं होगा।
---	-----------------------------------

वज़न के आधार पर प्रसिद्ध खाद्य पदार्थों की जकात अल-फ़ित्र की मात्रा:

चावल: 2300 ग्राम।	सूजी: 2000 ग्राम।	आटा: 1400 ग्राम।
चना: 2000 ग्राम।	मसूर: 2100 ग्राम।	गेहूँ: 2040 ग्राम।
किशमिश: 1640 ग्राम।	खजूर: 1800 ग्राम।	फलियां: 2060 ग्राम।

प्राप्तकर्ता एवं मात्रा के आधार पर जकात के प्रकार:

1- जिसमें भुगतानकर्ता एवं प्राप्तकर्ता का उल्लेख किये बिना भुगतान की जाने वाली वस्तु का निर्धारण किया गया है, जैसे सदका -ए- फ़ित्र।	2- जिसमें भुगतान की जाने वाली वस्तु एवं प्राप्तकर्ता का निर्धारण किया गया है, जैसे: पीड़ा (अज़ा) का फ़िदया: "छः निर्धनों को खाना खिलाओ, प्रत्येक निर्धन को आधा साअ"।	3- जिसमें भुगतानकर्ता एवं प्राप्तकर्ता का निर्धारण किया गया है परंतु भुगतान की जाने वाली वस्तु का नहीं, जैसे क़सम का कफ़़ारा।
--	---	--



यहया बनि अकसम कहते हैं: मामून के शासनकाल में उनके पास मुनाज़रह की एक मजलसि -अर्थात वचारि परषिद- थी, एक दिन उसमें कुछ लोगों के साथ उत्तम वसूतूर धारण किये हुये रूपवान तथा सुगंध लगाये हुये एक यहूदी आया। वह कहते हैं कि: जब उसने वारूतालाप करना आरंभ किया तो भाषा पर उसकी अच्छी पकड़ का भी अंदाज़ा हुआ। वह कहते हैं कि: सभा जब समाप्त हुई तो मामून ने उसे बुलाया तथा पूछा कि: क्या तुम इस्राईली अर्थात यहूदी हो ?

तो उसने कहा: हाँ।

मामून ने उससे कहा: यदि तुम इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो तो मैं तुम्हारे लिये अमूक कार्य कर दूँगा, तुम्हें अमूक लाभ पहुँचाऊँगा, इस्लाम स्वीकार कर लेने की स्थिति में मामून ने उसे भलाई पहुँचाने का वादा किया। यहूदी ने कहा: नहीं, बल्कि, मैं अपने धर्म तथा अपने पति के धर्म पर चलूँगा। फिर वह चला गया। वह कहते हैं कि: एक वर्ष के पश्चात वही यहूदी हमारे पास मुसलमान के रूप में आया। उनका कहना है कि: उसने फ़किह (धर्म शास्त्र) एवं हदीस के विषय में उत्तम ढंग से अपनी बात रखी, सभा जब समाप्त हुई तो मामून ने उस बुलाया और कहा: क्या तुम वही व्यक्ति नहीं हो जिससे कुछ दिनों पहले मेरी भेंट हुई थी ?

उसने कहा: हाँ।

तो मामून ने पूछा कि: तुम्हारे इस्लाम धर्म स्वीकार करने का कारण क्या है? यहूदी ने उत्तर देते हुये कहा: सुनें एवं अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहें, उस दिन जब मैं आपके परषिद से वापस गया तो मैंने इन धर्मों को जाँचने का इरादा बनाया, तथा मैं बड़े उत्तम ढंग से लिखना जानता हूँ, अतः मैंने तौरात लेकर उसकी तीन प्रतियाँ अपने हाथों से लिखीं और उसमें अपनी ओर से कुछ कमी-वृद्धि कर दी, तथा उसे गरिजा घर में रख दिया, तो लोगों ने इसे मुझ से खरीदा और उन्होंने इसे पढ़ने का या इसकी समीक्षा करने का कदापि प्रयास नहीं किया, इसके पश्चात मैंने इंजील (बाइबल) लेकर इसकी तीन प्रतियाँ लिखीं तथा इसमें अपनी ओर से जोड़-घटाव किया और इसे बीआ अर्थात सनिगांग (आराधनालय) में रख दिया, तो लोगों ने इसे मुझ से खरीदा और इसे पढ़ने या इसकी समीक्षा करने का कदापि प्रयास नहीं किया, इसके बाद मैंने कुरआन की तीन प्रतियाँ अपने हाथों से तैयार कीं और इसमें कुछ घटा बढ़ा दिया, फिर इसे कागज़ बेचने वालों के पास रख दिया, तो उन लोगों ने कहा कि: हम इसे उस समय तक स्वीकार नहीं करेंगे जब तक इसे पढ़ न लें एवं इसकी समीक्षा न कर लें, उन लोगों ने इसकी गलतियों को पकड़ लिया तथा इसमें जोड़े एवं घटाये गये स्थानों को भी चिह्नित कर लिया, अतः उन लोगों ने उन प्रतियों को जला दिया तथा मुझे भी जान से मारने का प्रयास किया, तब मुझे पता चल गया कि यह अल्लाह के द्वारा संरक्षित पुस्तक है, और यही मेरे इस्लाम धर्म स्वीकार करने का कारण बना।



हज्ज के मनासकि (रस्में)

Indian

الهندية

हिफ्थम

तवाफ़ -ए- कुदूम

2

हजर -ए- असवद से आरंभ कर के हजर -ए- असवद पर अंत करने तक सात चक्कर लगाएंगे

हरी लाइट से पहले एवं बाद में सामान्य चाल चलेंगे जबकि ग्रीन सग्नल क मध्य पुरुष लोग तेज गति से दौड़ेंगे



शाम एवं मस्मिर वालों की मीकात जुहुफा 186 कि.मी

मदीना वालों की मीकात जुलहुलैफा 420 कि.मी

इराक़ वालों की मीकात ज़ात -ए- इरक़ 98 कि.मी.

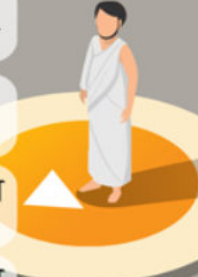
नज्द वालों की मीकात करून -ए- मनाज़लि 99 कि.मी.

यमन वालों की मीकात यलमयलम 99 कि.मी.

1

एहराम

नुसुक (पूजा) में प्रवेश करने की नयियत



हवाई जहाज़ के द्वारा आने वाले लोग अपने सबसे निकटवर्ती आकाशीय मीकात के पास से गुज़रते हुए आकाश में ही नयियत करेंगे

मरवा

सफ़ा एवं मरवा के मध्य सई करना

3

सफ़ा



अरफ़ा में ठहरना

5

नौवीं तारीख के जुहर से आरंभ हो कर दसवीं तारीख के फ़ज्र तक रहता है
यहाँ जुहर एवं अस्म की नमाज़ एक साथ जुहर के समय में पढ़ेंगे

नौवीं की रात

मनि में रात बताना

आठवीं तारीख के जुहर, अस्म, मगरबि एवं इशा तथा नौवीं तारीख की फ़ज्र की नमाज़ वहाँ पढ़ेंगे

4

दसवी की रात

मुज़दलफ़ा में रात बताना

6

यहाँ नौवीं तारीख की मगरबि एवं इशा की नमाज़ एक साथ जमा करके तथा कस्म (मगरबि तीन एवं इशा दो रक़अत) पढ़ेंगे तथा दसवीं तारीख की फ़ज्र की नमाज़ पढ़ेंगे

दसवी तारीख को

छोटे जमरा फरि माध्यमक तित्पश्चात बड़े जमरा को ज़वाल के बाद (जुहर का समय हो जाने के बाद) कंकड़ी मारना

जमरा -ए- अक़बा को सात कंकड़ी मारना

7

जमरात को कंकड़ी मारना तथा मनि में रात बताना

12

जमरा 1

ग्यारहवीं एवं बारहवीं तथा जो देर करे उनका तेरहवीं तारीख को

13

तवाफ़ -ए- वदाअ



माहवारी एवं प्रसवोत्तर रक्तस्राव वाली महिला से माफ है

11

हज्ज -ए- तमतुअ करने वाले अथवा जसिने तवाफ़ -ए- कुदूम के बाद सई नहीं किया हो उनका सई करना

तवाफ़ -ए- इफ़ाज़ा

10

दसवी तारीख को



8

हज्ज -ए- तमतुअ एवं हज्ज -ए- करिन करने वाले व्यक्ती का हदय (क़ुरबानी) करना

दसवी तारीख को

दसवी तारीख को

सरि मुंडाना अथवा बाल छोटे करवाना

पुरुषों का सरि मुंडाना अथवा बाल छोटे करवाना, महिला अंगली के पोर के बराबर बाल छोटे करेगी

9



- हज्ज के अरकान (सूतंभ): जसिने रुकून छोड़ दिया उसका हज्ज मुकम्मल नहीं हुआ
- हज्ज के वाजिबत: जसिने वाजिब छोड़ दिया उसकी भरपाई पशु की बली के द्वारा हो जायेगी

तवाफ़ (परकिरमा)

2

आंत आरंभ

सात चक्कर लगाना, हजर -ए- असवद से आरंभ कर क हजर -ए- असवद पर ही समाप्त करना

- शाम एवं मस्जिर वासयिों की मीकात अल-जुहफ़ा 186 की.मी
- मदीना वासयिों की मीकात जुल हुलैफ़ा 420 की.मी
- इराक़ वासयिों की मीकात ज़ात -ए- इरक़ 98 की.मी
- नज्द वासयिों की मीकात क़रन -ए- मनाज़लि 99 की.मी
- यमन वासयिों की मीकात यलमलम 99 की.मी

1

एहराम

नुसुक में प्रवेश करने की नयियत

हवाई जहाज़ से आने वाले लोग आकाश में ही मीकात के नकिटतम स्थान से गुज़रत समय एहराम बांधेंगे

सात चक्कर

दोनों हरी बत्ती के पहले एवं बाद में सामान्य चाल से चलना जबकि दोनों हरी बत्ती के बीच तेज़ गति से चलना तथा यह केवल पुरुषों के लिये है

सफ़ा

सफ़ा एवं मरवा के मध्य सई करना

4

मरवा

मक़ाम -ए- इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ना (यदि संभव हो तो)

3

एहराम के महज़ूरात (वर्जनाएं)

- 1 सरि एवं शरीर के किसी भाग से बाल हटाना
- 2 नाखुन काटना
- 3 सुगंध लगाना
- 4 स्वयं अपना अथवा दूसरों का ववाह करना
- 5 महिलाओं से संभोग करना
- 6 धरती के जानवरों का शिकार करना

जो केवल पुरुषों के लिये वर्जित है:

जो केवल महिलाओं के लिये वर्जित है:

- 1 सलिा हुआ वस्त्र धारण करना, अर्थात ऐसा वस्त्र जो शरीर के अंगों के हिसाब से सलिा हुआ हो
- 2 अमामा अथवा टोपी इत्यादि जैसी किसी चीज़ से सरि ढाँपना
- 1 मुख को नक्रिाब अथवा बुरका के द्वारा ढाँपना, कति यदि वो अजनबी पुरुषों के साथ हों तो अपने मुख को दुपट्टा इत्यादि से ढकेगी
- 2 दस्ताना पहनना

सरि मुंडाना अथवा बाल छोटे करवाना

5

पुरुषों का सरि मुंडाना अथवा बाल छोटे करवाना, तथा महिला उंगली के पोर के बराबर बाल छोटे करेगी

उमरा के मुस्तहब कार्य:

- 1 एहराम की नयियत करने के पूरव बाल एवं नाखुन काटना यदि काटने की आवश्यकता हो तो
- 2 एहराम के लिये स्नान करना
- 3 पुरुषों का अपने शरीर पर सुगंध लगाना
- 4 पुरुषों का सफ़ेद चादर एवं तहमद धारण करना
- 5 एहराम बांधने से लेकर तवाफ़ आरंभ करने तक तलबयिह (लब्बैका अल्ललहुम्मा लब्बैका, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैका, इन्नल हम्दा वन्नेअमता लका वलमुल्क, ला शरीका लका) पढ़ना
- 6 तवाफ़ के दौरान पुरुषों का इज़तबाअ करना, अर्थात: अपने दाहनि कंधे को खुला रखना
- 7 हजर -ए- असवद को चूमना
- 8 प्रथम तीन चक्करों में रमूल करना (तेज़ गति से चलना)
- 9 मक़ाम -ए- इब्राहीम के पीछे दो रक्अत नमाज़ पढ़ना

मनुष्य की अपनी एक विशेष प्रवृत्ति और मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं। परंतु उस के आस-पास का समाज उन्हें प्रभावित करता है। कई प्रामाणिक हदीसों में इनका उल्लेख किया गया है

सुन्नत	हुक्म	परिभाषा
[1] मूँछ काटना	सुन्नत है, तथा पूर्णरूपेण मूँड़ना मकरूह (अप्रिय) है	मूँछ के विषय में सुन्नत यह है कि उस को काटा जाये तथा कम किया जाये, और उसे इस प्रकार से काटा जाये कि होठ का निचला भाग दिखने लगे।
[2] दाढ़ी बढ़ाना	वाजिब है	दाढ़ी मूँड़ना हराम (वर्जित) है, क्योंकि यह दाढ़ी को छोड़ने एवं बढ़ाने से संबंधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों का उल्लंघन है।
[3] मिस्वाक (दातुन) करना	मुअक्कद अर्थात् ऐसी सुन्नत जिस पर ज़ोर दिया गया है।	पीलू अथवा किसी अन्य लकड़ी की टहनियों आदि को दाँत की स्वच्छता के लिये प्रयोग करना, मिस्वाक करना हर समय सुन्नत है, बल्कि इस पर अत्यधिक बल दिया गया है: जुजू के समय, नमाज़ के समय, घर एवं मस्जिद में प्रवेश करते समय, कुरआन का पाठ करते समय, निद्रा से जागने के समय, मृत्युशय्या पर, तथा मुख से दुर्गंध आने पर।
[4] नाक में पानी डाल कर साफ करना	जुजू की सुन्नत है	नाक में पानी डाल कर तत्पश्चात् नाक को झाड़ कर उसे धोना एवं स्वच्छ करना।
[5] नाखून काटना	सुन्नत है, तथा इसे काटने में चालीस दिन से अधिक की देरी नहीं करनी चाहिये	नाखून को काटना चाहिये क्योंकि इसे छोड़े रखने से इस के नीचे गंदगी एकत्र हो जाती है।
[6] उंगली के जोड़ों को धोना	सुन्नत है	उन स्थानों की सफाई करना जहाँ गंदगी जमा होती है; और ये उंगलियों के जोड़ एवं गाँठें हैं।
[7] बगल के बाल उखाड़ना	सुन्नत है, तथा इसे उखाड़ने अथवा काटने में चालीस दिन से अधिक की देरी नहीं करनी चाहिये	इससे अभिप्राय बगल में उगने वाले बालों को समाप्त करना है, चाहे इसे उखाड़ कर समाप्त किया गया हो अथवा मूँड़ कर अथवा किसी अन्य तरीके से, क्योंकि इसे समाप्त करने से स्वच्छता प्राप्त होती है एवं बगल की दुर्गंध दूर होती है।
[8] नाभि के नीचे के (जघन) बालों को समाप्त करना	सुन्नत है, तथा इसे समाप्त करने में चालीस दिन से अधिक की देरी नहीं करनी चाहिये	इससे अभिप्राय अंग विशेष (जननांग) के निकट उगने वाले बाल हैं, इसे मूँड़ने के अतिरिक्त किसी अन्य ढंग से भी समाप्त किया जा सकता है, जैसे आधुनिक हेयर रिमूवल ड्रीम।
[9] इस्तिजा करना	मल-मूत्र त्याग के शिष्टाचार में से है	आगे-पीछे के दोनों रास्तों से जो निकलता है उसे पानी आदि से धो कर साफ करना, बाहर निकलने वाले विशेष स्थान एवं जो उस के आस-पास होता है उसे धोना।
[10] कुल्ली करना	जुजू की सुन्नत है	मुख में पानी डाल कर तत्पश्चात् बाहर निकाल कर मुख को साफ करना

आइशा रजियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि: अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फरमाया: "दस कार्य फ़ितरत अर्थात् प्रकृति के अनुसार हैं: मूँछें काटना, दाढ़ी बढ़ाना, दातुन का प्रयोग करना, नाक में पानी डालना, नाखून काटना, उंगलियों के जोड़ धोना, काँख के बालों को उखाड़ना, जघन बाल को काटना और अपने जननांगों को पानी से साफ करना"। रावी अर्थात् कथावाचक ज़करीया कहते हैं कि मुसअब ने कहा कि: मैं दसवाँ भूल गया हूँ, परंतु संभव है कि वह कुल्ली करना हो। कुतैबा ने इसमें इतनी वृद्धि की है कि: वही ने कहा कि: (अरबी शब्द: इतिहास का अर्थ है: मल-मूत्र त्याग के पश्चात् पानी का प्रयोग करना।

[11] ख़तना करना	पुरुषों के लिए वाजिब व अनिवार्य है तथा यदि आवश्यक हो तो महिलाओं के लिए अनुशंसित है	शिश्न की अग्र-त्वचा (ख़ाल) को हटा देने की प्रक्रिया का नाम ख़तना है, ताकि उस में मैल इकट्ठा हो, एवं पेशाब करने के पश्चात् पूर्णरूपेण स्वच्छता प्राप्त हो।
-----------------	--	---

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "पाँच कार्य फ़ितरत अर्थात् प्रकृति के अनुसार हैं: ख़तना करना ... हदीस अंत तक"। (इस हदीस को बुख़ारी एवं मुस्लिम ने वर्णित किया है)।

स्रोत: फ़तहूल मुईन फ़ी तक्रीब मनहजिस्सालिकीन व तौज़ीहिल फ़िक्ह फ़िदीन, लेखक: शैख़ हैसम सरहान, अल्लाह तआला उन की सुरक्षा करे।

प्रथम संस्करण १४४३ हिजरी।

हिंदी अनुवाद: साबिर हुसैन पुत्र मुहम्मद मोजीबुर रहमान

संपर्क के लिये: <https://alsarhaan.com>

इस्लामी अखलाक

ولا تعتدوا

हद से आगे न बढ़ो

ولا تعثوا في الأرض مفسدين
ज़मीन में फसाद न मचाओ

ولا تقف ما ليس لك به علم
जिस की तुम्हें जानकारी न हो उसके पीछे न पड़ो

ولا تلبسوا الحق بالباطل
सत्य को असत्य से गडमड न करो

ولا تمش في الأرض مرحا
ज़मीन में अकड़ कर न चलो

ولا تصعر خدك للناس
लोगों से अपने चेहरे को न फेरो

واخفض جناحك للمؤمنين
मोमिनो के लिए नर्म पहलु इख्तियार करें

واغضض من صوتك
अपनी आवाज़ धीमी रखो

وأعرض عن الجاهلین
अज्ञानियों की ओर ध्यान न दें

خذ العفو وأمر بالعرف
आप क्षमा से काम लें, सदाचार का आदेश दें

واقصد في مشيك
अपनी चाल में संतुलन रखो

ادفع بالتي هي أحسن
आप बुराई को अच्छाई द्वारा दूर करें

ادع إلى سبيل ربك بالحكمة
आप अपने रब की राह की ओर हिकमत के साथ बुलाएँ

لا تبطلوا صدقاتكم باليمن والأذى
उपकार जताकर तथा दुःख देकर अपने दानों को व्यर्थ न करो

ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل
आपस में एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ

ولا تنابزوا بالألقاب
आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से न पुकारो

ولا يفتب بعضكم بعضا
तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई न करे

لا يسخر قوم من قوم
कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए

اجتنبوا كثيرا من الظن
बहुत ज़्यादा गुमान पालने से बचो

ولا تجسسوا
टोह में न लगे रहा करो

ادخلوا في السلم كافة
इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल हो जाओ

وإذا حييتم بتحية فحيوا بأحسن منها
जब तुम से सलाम किया जाए तो उस से बेहतर अंदाज़ में उस सलाम का जवाब दो

وبالوالدين إحسانا وذي القربى واليتامى
माँ-बाप, रिश्तेदारों और अनाथों के साथ अच्छा व्यवहार करो

وأطعموا البائس الفقير
परेशान हाल फकीरों को खाना खिलाओ

ولا تبدلوا الخبيث بالطيب
बुरी चीज़ को अच्छी चीज़ से न बदलो

وآتوا اليتامى أموالهم
अनाथों को (बालिग होने के बाद) उनका माल दे दो

أنفقوا مما رزقناكم
हमारी दी हुई रोज़ी से खर्च करो

وقولوا قولا سديدا
दुरुस्त बात बोलो

وقولوا للناس حسنا
लोगों से अच्छी बात किया करो

واحفظوا أيمانكم
अपनी खाई हुई क़समों की हिफाज़त करो

ولا تعاونوا على الإثم والعدوان
पाप और अत्याचार में एक-दूसरे की सहायता न करो

وتعاونوا على البر والتقوى
सदाचार तथा संयम में एक-दूसरे की सहायता करो

وأوفوا بعهد الله إذا عاهدتم
जब अल्लाह से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो

وأوفوا الكيل إذا كلتهم
जब नापो पूरा नापकर दो

وزنوا بالقسطاس المستقيم
सहीहू तराजू से तोलो

كونوا قوامين بالقسط
इंसाफ पर क़ायम रहने वाले बनो

اعدلوا
इन्साफ से काम लो

सार

तो अधिकार जो नैसर्गिक रूप से होने चाहियें तथा
शरीअत ने भी उन्हें अनुमोदित किया है, हिंदी भाषा
में, लेखक: इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह।

इब्ने उसैमीन द्वारा, भगवान उस पर
दया कर सकते हैं

इसका संक्षिप्तिकरण डॉक्टर हैसम सरहान ने

पूर्व शिक्षक मस्जिद -ए- नबवी
व पर्यवेक्षक मअहद अल-सुन्नह



कॉपीराइट उपलब्ध है

पुस्तिका के अनुवाद के लिए : sunnah.com - बारकोड स्कैन करें

1-अल्लाह तआला का अधिकार:

एक अकेले अल्लाह की इबादत व पूजा करना किसी को उसका साड़ी बनाये बिना, उसका विनम्र व आज्ञाकारी भक्त बन कर रहना, उसके आज्ञा का पालन करना, उसके निषेध व मना किये हुए कार्य से बचना, उसकी सूचनाओं की पुष्टि करना, आदर्श आस्था व अक़ीदा रखना, हक़ व सत्य पर ईमान रखना, फलदारी धार्मिक कर्म करना, ऐसी आस्था रखना जिसका आधार है: मुहब्बत व प्रेम तथा इबादत व पूजा, और उसका फल है: इखलास व निष्ठा तथा दृढ़ता व अडिगता।

2- अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अधिकार:

बिना किसी अतिशयोक्ति और कमी के उचित रूप से उनका आदर, सम्मान, और महिमांडन करना और उनका उचित सत्कार करना।

साथ ही उन पर विश्वास करना तथा उनकी पुष्टि करना जो उन्होंने हमें अतीत और भविष्य की घटनाओं के बारे में सूचित किया है, उन्होंने जो करने की हमें आज्ञा दी है, उसका अनुपालन करना तथा जो उन्होंने निषिद्ध किया है, उससे बचना, यह मानना कि उनका मार्गदर्शन बिल्कुल सटीक, पूर्ण व सही मार्गदर्शन है, तथा उनकी लाई हुई शरीयत (इस्लामी कानून) और उनकी रीरत व मार्गदर्शन का बचाव करना।

3- माता-पिता के अधिकार:

उनके साथ नेकी करना, और यह होगा उनके साथ कर्म एवं कथन में शरीर एवं धन के साथ शिष्टाचार व एहसान करने के द्वारा, उनके आज्ञाओं का पालन करना यदि वो अल्लाह की अवज्ञा पर आधारित नहीं हैं तो और न जिसमें आपको कोई क्षति व हानि होती हो।

4- संतान के अधिकार:

1-पालन-पोषण एवं शिक्षा: यह उनके दिलों में उच्च स्तर पर धर्म और नैतिकता का विकास करना है।

2-उन पर बिना फिजूलखर्ची और लापरवाही के उचित तरीके से खर्च करना।

3- खर्ची और उपहारों में किसी को भी एक दूसरे के ऊपर वीर्यता न देना।

5- सगे-संबंधियों के अधिकार:

रिश्तेदारी के संबंधों को बनाए रखने के लिए अपने सगे-संबंधियों के साथ भलाई करे, अपनी सामाजिक स्थिति का प्रयोग करके, उन्हें शारीरिक तथा आर्थिक रूप से लाभान्वित करने के लिए प्रयासरत रहे, इस बात को आधार बनाते हुए कि वे कितने निकटवर्ति और जरूरतमंद हैं।

6- पति-पत्नी के अधिकार:

एक-दूसरे के साथ दयापूर्वक रहना और एक-दूजे के जो अधिकार हैं उन्हें पूरी सहनशीलता और सहजता के साथ अदा करना, बिना किसी बाध्यता या टाल-मटोल के।

पत्नी का अपने पति पर अधिकार यह है कि: वह उसके भोजन, पेय, वस्त्र, आवास इत्यादि का प्रबंध करे, (और एक से अधिक पत्नी होने की स्थिति में) सभी पत्नियों के मध्य न्यायपूर्ण व्यवहार करे।

पति का अपनी पत्नी पर अधिकार यह है कि: अल्लाह की अवज्ञा न करने वाले मामलों में उसकी आज्ञा का पालन करना, उसके रहस्यों और धन की रक्षा करना, और ऐसा कार्य न करना जो पूर्णतः उस से लाभांवित होने से उसे रोक दे।

7- शासकों और प्रजा के अधिकार:

शासकों पर प्रजा के अधिकार: अल्लाह ने उन्हें जो अमानत व दायित्व सौंपा है और जिन जिम्मेवारियों को अदा करने के लिये बाध्य किया है, उसको अंजाम देना, जैसे कि उनका अपनी प्रजा को सलाह देना और उन्हें सही रास्ते पर ले जाना जो लोक और परलोक में उनके लाभ की गारंटी देता है, और ऐसा मोमिनों के मार्ग पर चलते हुए करे।

प्रजा पर शासकों के अधिकार: अल्लाह तआला ने उन्हें उनके मामलों का जो दायित्व सौंपा है उसके विषय में उन्हें सलाह देना, यदि वो लापरवाही करें तो उन्हें (उनका दायित्व) याद दिलाना, यदि वे सत्य मार्ग से भटक जायें तो उनके लिये प्रार्थना करना, अल्लाह की अवज्ञा न करने वाले मामलों में उनका आज्ञापालन करना, और उनकी सहायता करना।

8-पड़ोसी के अधिकार:

पड़ोसी: वह है जिस का घर आप के घर के निकट हो, पैसे, सामाजिक स्थिति और अन्य प्रकार की सहायता का उपयोग करके उनके अच्छे लिये आप जो कुछ भी कर सकते हैं, उसको करें। आपको उन्हें किसी भी प्रकार का मौखिक या शारीरिक नुकसान पहुँचाने से भी बचना चाहिए।

1- यदि वह वंश के आधार पर आपका संबंधी है और मुसलमान है, तो उसका आप पर तीन अधिकार हैं: पड़ोस का अधिकार, रिश्तेदारी का अधिकार और इस्लाम का अधिकार।

2- यदि वह मुसलमान है और वंश के आधार पर वह आपका संबंधी नहीं है, तो उसके पास दो अधिकार हैं: पड़ोस का अधिकार और इस्लाम का अधिकार।

3- यदि वह रिश्तेदार है परंतु मुस्लिम नहीं है, तो उसके दो अधिकार हैं: पड़ोस का अधिकार और रिश्तेदारी का अधिकार।

4- यदि वह संबंधी नहीं है और गैर-मुस्लिम है, तो उसका केवल एक अधिकार है: पड़ोस का अधिकार।

9- आम तौर पर एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर अधिकार:

उन्हीं में से है: सलाम करना, यदि वह आपको आमंत्रित करता है, तो निमंत्रण स्वीकार करें, यदि वह आपसे सलाह मांगे, तो उसे अच्छी सलाह दें, अगर वह छींकता है और 'अल्हमुदिलिल्लाह' कहता है, तो 'यरहमुकल्लाह' कहें, यदि वह बीमार हो, तो उससे

भेंट करने के लिये जायें, यदि वह मर जाता है, तो उसके अंतिम संस्कार में शामिल हों, उसे किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने से बचें। एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर अनेक अधिकार हैं, परंतु उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कथन के अर्थ में संक्षेपित किया जा सकता है: "एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है"। इस भाईचारे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये व्यक्ति अपने भाई के लिये सभी प्रकार की अच्छाइयों की तलाश करने का प्रयास करेगा तथा उसे नुकसान पहुंचाने वाली किसी भी चीज़ से बचने का प्रयास करेगा।

10- गैर-मुस्लिमों के अधिकार:

एक मुस्लिम शासक को जीवन, धन एवं मान-मर्यादा में इस्लामी कानून के अनुसार उन पर शासन करना चाहिए, जिन्हें दो हुराम व निषेध समझते हैं उन (का अपराधी हो जाने पर, उन) के ऊपर हद्द (इस्लामी शरीअत के अनुसार निर्धारित दंड) लगाना, उनकी सुरक्षा करना तथा उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाना।

उन्हें पोशाक में मुसलमानों से अलग होना चाहिए, और दो इस्लाम में वर्जित किसी भी चीज़ को अथवा अपने धर्म के किसी भी अनुष्ठान को प्रकट रूप से न अंजाम दें जैसे घंटी अथवा क्रॉस।

विषय सूची

- 1-अल्लाह तआला का अधिकार:
- 2-अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अधिकार
- 3-माता-पिता के अधिकार:
- 4-संतान के अधिकार:
- 5-सगे-संबंधियों के अधिकार:
- 6-पति-पत्नी के अधिकार:
- 7-शासकों और प्रजा के अधिकार:
- 8-पड़ोसी के अधिकार:
- 9-आम तौर पर एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर अधिकार:
- 10-गैर-मुस्लिमों के अधिकार:



मअहद अल-सुन्नह
mahadsunnah.com



शैख की वेबसाइट
alsarhaan.com

ملخص كتاب
الوسائل المفيدة للحياة السعيدة

(सुखी जीवन के लिए उपयोगी सदेश) नामक पुस्तक का सारांश

लेखक: अब्दुर्रहमान बिन नासिर अस्सादी रहिमहुल्लाह (१३०७ – १३७६ हिजरी)

(यह अपने युग के प्रकांड मुस्लिम विद्वान एवं प्रसिद्ध अन्वेषी थे)

इस पुस्तक के लेखन का कारण: जब शैख रहिमहुल्लाह ने उपचार के उद्देश्य से सन १३७३ हिजरी में लेबनान वी यात्रा वी थी तो वहाँ उन्होंने डेल कार्नेगी नामक अमेरिकी लेखक की एक पुस्तक का अध्ययन किया था जिसका शीर्षक था (चिंता छोड़ो सुख से जियो), यह पुस्तक उन्हें बहुत पसंद आई, अतः इसी को सामने रख कर उन्होंने यह पुस्तक लिखी।

1- अल्लाह तआला पर ईमान रखना एवं नेक अमल -सदकर्म- करना (क्योंकि अल्लाह पर ईमान रखना अल्लाह की ओर से मुकद्दर की गई चीज़ों पर सब्र करने, सहमत होने तथा संतोष करने के लिए प्रेरित करता है)।

2- कर्म एवं वक्तव्य के द्वारा जीव-जंतु पर एहसान व उपकार करना (क्योंकि भलाई करने वालों को भलाई मिलती है, तथा बुराई भी उनसे दूर होती है)।

3- लाभदायक ज्ञान अथवा कर्तव्य में लीन रहना (क्योंकि स्वयं को व्यस्त रखने से मन वो उन चीज़ों के बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलता है जो आपको व्यथित करें)।

4- आज बया करना है इस पर ध्यान केंद्रित करें (जो बीत गया उसकी चिंता न करें, और जो आने वाला है उसके लिए व्याकुल न हों, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चिंताजनक एवं दुःख दायक चीज़ों से अल्लाह की शरण मांगा करते थे)।

5- अधिकाधिक अल्लाह तआला का स्मरण व ज़िक्र करना (क्योंकि अल्लाह का स्मरण करना दिल की शांति एवं उसको चिंतामुक्त बनाने का कारण है)।

المؤلف:

عبد الرحمن بن ناصر
الشعدي ١٣٠٧ -
١٣٧٦ هـ من أبرز
علماء المسلمين
في عصره، واحد
الأئمة المحققين

سبب التأليف:

لما سافر الشيخ إلى
لبنان في رحلة علاجية
عام ١٣٧٣ هـ فقرأ هناك
كتاب (دع القلق وأبدأ
الحياة) للكتاب
الأمريكي ديل كارنيجي
فأعجب به، وألف على
ضوئه هذا الكتاب.

١ الإيمان بالله تعالى والعمل الصالح

فالإيمان يقود إلى الصبر
والرضا والقبالة بما قسم
الله.

٢ الإحسان إلى الخلق بالقول والفعل

فالخير يجلب الخير ويدفع
الشر.

٣ الاشتغال بعمل أو علم نافع

فمن يلهي القلب عن
التفكير فيما يفعله،

٤ اشغال الفكر بعمل اليوم

فلا تزدن عما مضى ولا
تلهي بما سيأتي، فقد كان
النبي ﷺ يستعين بالله من
ألم والذين.

٥ الإكثار من ذكر الله تعالى

فذكر الله يجلب الطمأنينة
والسكينة للقلب.

6- अल्लाह तआला की स्पष्ट एवं छिन्न नियामतों का शुमार करना (क्योंकि यह आपके अंदर शुक्र एवं धन्यवाद का भाव उत्पन्न करेगा जो चिंताओं को भूल जाने का कारण बनेगा)।

1
لَمَدَاد نِعْمَ قَدَّرَ تَعَالَى
الظَّاهِرَةَ وَالْبَاطِنَةَ
فَهُوَ بِحَسْبِ الشُّكْرِ وَبِئْسَى
الْهَمُّ

7- अपने से नीचे वालों को देखना (क्योंकि इससे आपके पास जो कुछ है उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करने का भाव आपके मन में उत्पन्न होगा, और यह आपकी चिंताओं एवं दुखों को दूर कर देगा)।

2
النَّظَرُ إِلَى مَنْ هُوَ
أَسْفَلَ مِنْكَ
فَهُوَ يَقُودُكَ إِلَى حَمْدِ اللَّهِ
عَلَى مَا أَنْتَ عَلَيْهِ وَبِئْسَ
حَزَنًا وَهَمًّا

8- जो बीत गया उसको भूल जाना (क्योंकि जो बीत गया उसको वापस लाना असंभव है, अतः उसके विषय में चिंता करना, बेकार बात एवं पागलपन है)।

3
نَسِيَانِ مَا مَضَى
فَمَا مَضَى لَا يُمْكِنُ رَدُّهُ
وَالْمُتَعَلِّقُ بِهِ عَيْنٌ وَجَنُونٌ

9- अल्लाह तआला से अनवरत दुआ करते रहना (जैसे यह दुआ करे कि: अल्लाह तआला उसके दीन, दुनियाँ एवं आखिरत (धर्म, लोक एवं परलोक) को सुधार दे, जैसाकि हदीस में वर्णित है।

4
دُعَاءُ اللَّهِ تَعَالَى
كَالدُّعَاءِ أَنْ يَصْلَحَ لَهُ دِينُهُ
وَدِينُهُ وَآخِرَتُهُ كَمَا جَاءَ فِي
الْحَدِيثِ

10- इससे भी बुरी स्थिति की कल्पना करें (आपदा के समय इससे भी बुरी स्थिति में पड़ जाने की कल्पना करे, इससे उस समय वाली आपदा उसको हल्की लगने लगेगी, और जब कोई आपदा आ जाए तो उसको दूर करने का हरसंभव प्रयास करे)।

5
أَنْ يَخْذِرَ أَسْوَأَ
الْإِحْتِمَالَاتِ
فَمَنْ دَخَلَ دُخَانًا مِنْهُ فَدَّرَ سُورًا
إِحْتِمَالًا فَهُوَ يَخْفِضُهَا عِنْدَ
وُقُوعِهَا فَإِذَا وَقَعَتْ أَسْعَى
فِي تَخْفِيفِهَا فَدَّرَ الْإِمْكَانَ

11- , वहम एवं बेकार चिंताओं से दूर रहना (क्योंकि वहम आपके अंदर बुरे विचार का संचार करता है, जिससे व्यक्ति किसी अन्होनी की आशंका से व्याकुल हो जाता है, ज्ञात हो कि यह दुखों एवं रोगों का एक बड़ा कारण है)।

6
أَنْ لَا يَسْتَرْسِلَ فِي
الْأَوْهَامِ وَالْخَيَالَاتِ
فَالْأَوْهَامُ تَحْبِلُ لَكَ الْأَفْكَارَ
السَّيِّئَةَ وَتُوقِعُ دُخُولَ
مَكْرُوهٍ وَهُوَ سَبَبٌ
لِلْهَمِّ وَالْأَمْرَانِي

12- हार्दिक रूप से पूरी तरह अल्लाह पर तबक्कुल, भरोसा एवं एतमाद करना (अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾ जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो अल्लाह उसके लिए पर्याप्त होगा) सूरह तलाक़: ३ ।

7
اعتماد القلب على
الله، والتوكل عليه
(ومن يتوكل على الله فهو
حسبه)

13- दूसरों की गलतियों को बरदाश्त करना एवं उस पर संयम बरतना सीखें (क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई ऐसा ऐब, कमी, त्रुटि या कोई ऐसी चीज़ अवश्य होगी जो आपको अप्रिय होगी, अतः उसको छोड़ कर उसकी अच्छाइयों की ओर ध्यान केंद्रित करें)।

8
تحمل أخطاء الآخرين
والصبر على أذاهم
فكل إنسان له رد أن يكون
فيه عيب أو نقص أو أمر
يكرهه، فالتوكل على الله
الذي أحسن

14- **निरर्थक एवं बेकार बातों में स्वयं को व्यस्त रखने से दूर रहें** (क्योंकि जिस प्रकार से आप बड़े मामलों से बचने के लिए स्वयं को बौद्धिक एवं शारीरिक रूप से तैयार रखते हैं, उसी प्रकार छोटी बातों की ओर ध्यान देने की भी कोई आवश्यकता नहीं है)।

١٤
أن لا تشغل بتوافه الأمور
فكما نوظن نفكك على تحمل الجوارب والقمم الخشن فاعلموا من باب أولى أن تشغل عنها

15- **जीवन बहुत छोटा है** (वास्तविक जीवन -अल्प होने के बावजूद- वह जीवन है जिसमें सुख चैन का समावेश हो, अतः इसे चिंता एवं दुःख में पड़ कर और अधिक छोटा न करें)।

١٥
الحياة قصيرة
فالحياة الحقيقية -جو صغرى- حياة السعادة والطمأنينة من تعرضنا لأثر بهمهم واسترسال مع الأذى

16- **चिंता के बहुतेरे कारणों में यदि गहन विचार किया जाए तो पता चलेगा कि वास्तव में ये चिंता का कारण हैं ही नहीं** (क्योंकि बहुत सी चिंताजनक बातें जिनके विषय में सोच-सोच कर मानव परेशान रहता है वो घटित ही नहीं होती हैं, अतः उन बड़ी चिंताओं को पछाड़ने के लिए आप के पास यदि एक क्षीण आशा भी हो तो उसको तुच्छ न समझें)।

١٦
خاطر من القلق وهم لا حقيقة له
فخاطر من الأشياء التي فاقمت منها لم تحدث من ادع احتمال الضيق يغلب التحملات الخيرة القوية

17- **लोगों की ओर से मिलने वाली परेशानियों पर दुखी न हों** (क्योंकि लोगों से जो दुख आपको मिलता है वास्तव में वह उस को ही चोट पहुँचाने वाला होता है, किंतु जब आप उसमें व्यस्त हो जाएंगे तो यह आपको भी उसी प्रकार से हानि पहुँचाएगा जिस प्रकार से यह उन्हें हानि पहुँचाता है)।

١٧
لا تلزعج من أذى الناس
فأذى الناس على أنفسهم وإذا شغلت بها فترك كما تعرضهم

18- **आपका जीवन आपके विचार के अधीन है** (यदि आप ऐसी चीज़ों के बारे में विचार-विमर्श करते हैं जिससे आपको लोक परलोक दोनों में लाभ हो तब तो आपका जीवन सुखमय जीवन है, अन्यथा इसके विपरीत आपका जीवन दुःखमय जीवन होगा)।

١٨
حياتك تبع لأفكارك
فإن كانت أفكارك رديا يعود عليك نفعه في من أو دنا حياتك فبذلك سيعود لك فائز بالعكس

19- **लोगों के शुक्रिया एवं धन्यवाद की आशा तथा प्रतीक्षा न करें** (यदि आपने किसी व्यक्ति पर उपकार किया है चाहे उसका अधिकार आप पर था अथवा नहीं, तो यह आपने अल्लाह की खातिर किया है, अतः लोगों से धन्यवाद की अपेक्षा न करें)।

١٩
لا تنتظر من الناس الشكر
إذا أحسنت إلى من له حق عليك أو من ليس له حق ففي معاملة منك مع الله فلا يزال بعد شكرهم لك

20- **स्वयं को ऐसी चीज़ों में व्यस्त रखें जो आप के लिए लाभदायक हों** (क्योंकि हानिकारक चीज़ें आपको दुःख एवं चिंता में डालती हैं, अतः अल्लाह से सहायता माँगते हुए स्वयं को लाभदायक चीज़ों में व्यस्त रखें)।

٢٠
أشغل نفسك بما ينفعك
فالأمور النافعة تجلب لكم الخير والحرز فاستعين بالله تعالى

21- **आज का काम कल पर न डाल** (क्योंकि यदि आप अपने कर्तव्यों का त्वरित निर्वहन नहीं करते हैं तो पिछले कार्यों का आपके पास देर तो लगेगा ही आने वाले कार्यों का जमावड़ा भी आपके पास लग जाएगा)।

٢١
احسم الأعمال في الحال
فالأعمال إذا لم تحسم تجمع عليك ثقل الأعمال السائبة والتأخيرات ربما الأعمال الآخرة فاشغلك

22- अपनी प्राथमिकताएं तय करें (अतः सर्वप्रथम श्रेष्ठतम तत्पश्चात श्रेष्ठ अर्थात् सबसे पहले अति महत्वपूर्ण फिर महत्वपूर्ण, इस प्रकार अपनी प्राथमिकताएं तय कर लें, और उस चीज़ से प्रारंभ करें जिसको आप पसंद करते हैं ताकि आप काहिली एवं आलस्य का शिकार न हों, एवं मशवरा करें क्योंकि अरबी में एक कहावत है: “जिसने परामर्श किया वह कभी लज्जित नहीं हुआ”।